पाठ 10. कौन सिखाता है

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि पशु-पक्षी किस तरह अपना पालन-पोषण करते हैं। वे भी अपना ध्यान रखना जानते हैं। जिस तरह हमें हमारा काम करना, चलना-फिरना, खाना-पीना प्रकृति सिखाती है, उसी प्रकार पशु-पक्षियों को भी यह सब प्रकृति ही सिखाती है।

कविता का सारांश

चिड़ियाँ चीं-चीं की आवाज़ करतीं यहाँ-वहाँ फुदकती फिरती हैं, कौन सिखाता है उन्हें यह सब? कौन उन्हें उड़ना, दाने चुगना, घोंसला बनाना, अपना तथा अपने बच्चों का ध्यान रखना, प्यार-दुलार करना सिखलाता है। कवि कहते हैं कि यह सब हमें तथा सभी पशु-पक्षियों को कुदरत ही सिखलाती है पर वह हमसे इसके बदले में कुछ भी नहीं लेती। अत: हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी प्रकृति की रक्षा करें। उसे नुकसान न पहुँचाएँ।

अध्यापन संकेत

कविता वाचन से पूर्व बच्चों से पूछें कि उन्होंने चिड़िया को तो देखा होगा। चिड़िया कैसी आवाज़ करती है और कैसे चलती है, बच्चों से जानें। उन्हें कुछ और पशु-पक्षियों की आवाज़ों के बारे में बताएँ। जैसे – कबूतर-गुटरगूँ, कोयल – कुहू-कुहू, कौआ – काँव-काँव, मोर – पिऊ-पिऊ तथा मेंढक – टर्र-टर्र की आवाज़ करते हैं।

कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों से पूछें –

- उन्हें कविता कैसी लगी?
- क्या उन्होंने कभी चिड़िया का घोंसला देखा है? यदि नहीं तो उन्हें बताएँ कि चिड़िया बहुत मेहनती होती है। वह एक-एक तिनका जोड़-जोड़कर अपना घोंसला बनाती है।
- कविता में आए कठिन शब्दों को उच्चारण के साथ श्यामपट्ट पर लिखें तथा बच्चों को उनके अर्थ समझाएँ।
- मौखिक कौशल में दिए शब्दों का बच्चों से उच्च स्वर में उच्चारण करवाएँ। प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रेरित करें। अपने समक्ष अभ्यास करवाएँ। प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।